

बटोही श्रीराम

तीसरा प्रेमी-(प्रेम से नमस्कार कर) श्रीसन्त सद-
गुरुदेव ! आपके कृपा-प्रसाद से आज मैंने देखा कि, वन का
ऊबड़-खाबड़ कण्टकाकीर्ण पथ है । सूर्य की प्रचण्ड किरणों से
धरती तप रही है । ऐसे बीहड़ जंगल में श्रीअयोध्या के लाड़ले
श्राजकुमार श्रीयुगलधनी और श्रीलक्ष्मणलाल वनवासी वेश में
तालपत्र के छते लगाये धीरे-धीरे दुर्गम मार्ग से आगे बढ़ रहे
हैं । शरीर स्वेद से लथपथ, मुरझाई अंगकांन्ति और प्यासे
अधर, परमकोमल स्वभावा श्रीस्वामिनीजू अपने प्रियतम के
मुखारविन्द और वनवासी वेश को देखकर अपना दुःख भूल
जाती हैं और परम प्रियतम प्राणेश्वर के दुःख से व्याकुल होने
लगती हैं । उनको घबड़ाते देखकर प्रेमपरवश श्रीरामभद्र
अनुरागरंजित श्रीवचनों से आश्वासन देते हुए बोले-‘अब क्या,
यह रहा कालिन्दी पुलिन ! कैसी सुन्दर वृक्ष-पंक्ति है मानो
अपने कर-पल्लव हिला-हिलाकर हम लोगों को प्रेम-निमन्त्रण दे
रही है ।’ (सब रोते हैं) यह दृश्य देखकर मैं अत्यन्त व्याकुल
हो गया और प्रभु से प्रार्थना करने लगा कि ‘हमारे प्यारे साईं के
जीवनधन परम प्रियतम श्रीयुगलधनी का कुशल हो, वे सर्वदा
सुखी रहें, उनके चरण कमलों के नीचे की धरती मखमल से भी
कोमल बन जाय, चाँदनी हो जाय और यह ताती-ताती लू
सीरी-सरी बन जाय, हरयाली और पुष्पों की महक से श्रीयुगल

सुखी हों ।’ मैंने देखा कि सामने ही एक बरगद का विशाल वृक्ष है । उसकी घनी छाया में कोमल कुसुमों के आसन पर युगल सरकार आसीन है । परस्पर एक दूसरे का पथश्रम मिटाने के लिये एक दूसरे को पंखा झल रहे हैं । श्रीलक्ष्मणलालजी दूर से जल लिये आ रहे हैं । एक ओर से श्रीस्वामीजू सहचरी रूप में मधुर फलों की झोली लिये, प्रेम के नशे में झूमते हुए आ रहे हैं । श्रीयुगलधनी का भोजन, पान, आनन्द-कलोल हँसी-खेल देखकर मैं तो आनन्दमत्त होकर ‘साईं साईं’ कहने लगा । उसी समय श्रीस्वामीजी कोकिलकण्ठ से मधुर-मधुर संगीत का गान करने लगे । उसके प्रभाव से आकाश में साँवले-साँवले सजल मेघ घिर आये और गुलाबजल के समान नन्हीं-नन्हीं फुहियाँ बरसाने लगे । मोर कूँज-कूँजकर नृत्य करने लगे । ‘जय हो ! जय हो !!’ की ध्वनि से वह बीहड़ बन गूँज उठा ।